उड़ने वाली लड़की

एन ग्रिफाल्कोनी



यहाँ एक उड़ने वाली लड़की आ रही है!

वह यहाँ लंबे समय तक नहीं रहेगी -

वह उड़ जाएगी!

नासिया की माँ जानती है कि बचपन एक ऐसा समय होता है जो बहुत जल्दी बीत जाता है. अपने दिन खेलने और दौड़ने में बिताने के बजाय, नासिया को अब अपनी माँ की मदद करनी चाहिए, जो नए साल के जश्न की तैयारी कर रही है. नासिया को नए साल के समारोह के लिए टोकरियाँ बुनने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विशेष नरकट को इकट्ठा करने के लिए भेजा गया है.

लयबद्ध गद्य और जीवंत छवियों की इस जादुई कहानी में, एक लड़की का सपना है कि वह पहाड़ों पर उड़ती है, आत्माएँ जंगलों और नदियों में तैरती हैं, आवाज़ें फुसफुसाती हैं, और उसके पूर्वज नासिया को उसके लक्ष्य की ओर ले जाते हैं. उड़ने वाली लड़की बड़ी हो जाती है – जागरूक और संवेदनशील, और अब वो एक समझदार छोटी महिला बनने की राह पर है.





उड़ने वाली लड़की

एन ग्रिफाल्कोनी





“देखो वो उड़ने वाली लड़की आ रही है!” जब भी उसकी लंबी टांगों वाली बेटी गाँव के नीचे बहने वाली धारा से पगडंडी पर दौड़ती हुई दिखाई देती, तो उसकी माँ हँसते हुए कहती: “वह यहाँ ज़्यादा देर तक नहीं रुकेगी - वह उड़ जाएगी!”

लेकिन माँ को इस बात की चिंता नहीं थी कि नासिया बहुत दूर चली जाएगी, क्योंकि उनके ऊंचाई पर स्थित समा नाम के गाँव में, जो महान नाइजर नदी की एक छोटी शाखा पर स्थित था, कोई बहुत दूर तक देख सकता था.

वहां आवाज़ें भी दूर तक जाती थीं. जब बच्चे गाँव में चारों ओर घुमावदार धारा में खेलते होते तो माताएँ हमेशा अपने बच्चों की हँसी सुन सकती थीं.

और वे अपने मर्दों की आवाज़ भी सुन सकती थीं, जो हल चलाने वाले बैलों को बुलाते और हांकते थे. क्योंकि समा के किसानों को पुराने तरीके पसंद थे - उन्हें शोर मचाने वाली मशीनें पसंद नहीं थीं! वहाँ सिर्फ़ चाबुक की आवाज़ें और छोटे कुत्तों की खुशी से भौंकने की आवाज़ आती थीं जो उनके साथ-साथ दौड़ते थे.

और हमेशा, जब वे पेड़ों में हवा के गाने को सुनते, तो बुद्धिमान माएं समझ जातीं कि उनके पूर्वजों की आत्माएँ वहाँ थीं, जो उन सब पर नज़र रखे थी.



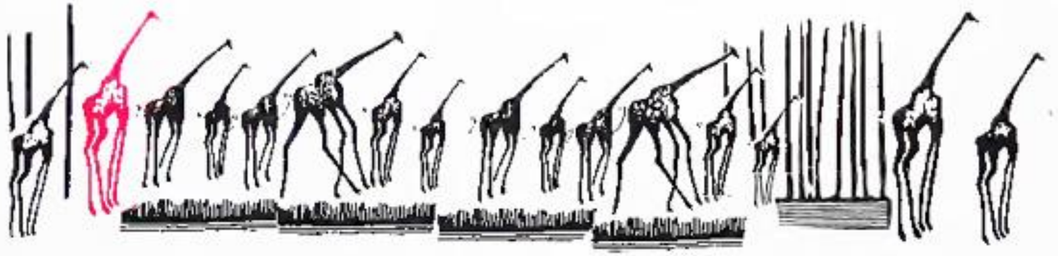
और यहाँ घर पर, जहाँ खाना पकाने की अच्छी महक बैंको (जो सूखी मिट्टी और भूसे को मिलकर बनती और घर को बारिश से बचाती थी) की महक के साथ मिल रही थी, युवा महिलाएँ और बुद्धिमान बूढ़ी महिलाएँ गोल रसोई घर में इकट्ठा होती थीं और खाना बनाते समय अक्सर बड़े बच्चों से बातें और गपशप करती थीं.

नासिया की माँ के गोल आकार को देखते हुए, एक बुद्धिमान बूढ़ी महिला ने उससे कहा, "अपने अगले बच्चे के आने से पहले तुम्हें अपनी छोटी नासिया से घर के कामों में मदद लेनी चाहिए?"

"लगता है कि मुझे ऐसा ही है करना ही होगा... नासिया की माँ ने मुँह फेरते हुए आह भरी. उसे अपनी छोटी लड़की से मदद लेना अच्छा नहीं लगता था - अभी नहीं!

"देखो बचपन इतनी जल्दी खत्म हो जाता है!" इसलिए उसने अपने इस विचार को ठुकरा दिया.





जाते हुए बुदबुदाती हुई, युवा महिला अपने घर लौटी. फिर उसने अपनी बेटी को पुकारा, शायद थोड़ा तीखे स्वर में: "नासिया! भागना बंद करो! और जल्दी से यहाँ आओ!" नासिया ने पुकार सुनी, उसे याद आया कि अब माँ को उसकी ज़रूरत थी. वह एक कामचोर बच्ची नहीं थी, लेकिन अपने दिल में, वह यह भी जानती थी कि जंगली पक्षियों की तीखी "काँव! काँव!" उसे दूर बुला रही थी - नीचे धारा में चमकती मछलियों की "छप! छप!" उसे दूर बुला रही थी - "बकबक! बकबक!“ करते ऊंचे ताड़ के पेड़ों पर बैठे भूरे बंदर उसे दूर बुला रहे थे - दूर की हर चीज उसे पूरे दिन, और भी अधिक तेज़ी से बुला रही थी!

फिर भी जब नासिया मुट्ठी भर फूल लेकर, बड़ी-बड़ी आँखों में सपने लेकर सरपट दौड़ती हुई आई, तो उसकी माँ ने फिर से आह भरी और अपना सिर हिलाया. उसे अपना बचपन बहुत अच्छी तरह याद आया: अंतहीन, खुशहाल हर दिन आज़ाद और मुक्त!



फिर, उसकी माँ ने धीरे से नासिया की नुकीली ठुड्डी को अपने हाथ में लिया.

"नासिया याद है? जल्द ही नया साल आने वाला है! हमें "नए साल" के लिए नई टोकरियाँ बनानी होंगी!"

नासिया ने सिर हिलाया. पिछले साल वह इतनी छोटी थी कि उसे कुछ भी समझ में नहीं आया था, सिवाय इसके कि वो दिन अच्छे खाने, पारिवारिक समारोहों और ढेर सारे हँसी-मज़ाक का समय था.

"हर कोई यहाँ होगा!" उसकी माँ ने चेतावनी दी. "और दादाजी आ रहे हैं, और उनके लिए खाना बनाने के लिए कोई पत्नी नहीं है!"

नासिया मुस्कुराई. दादाजी हमेशा से उसे सबसे ज़्यादा पसंद करते थे!

"इसलिए, नासिया," उसकी माँ ने कहा, "देखो इस साल, तुम्हारी बहन जिल्ला स्कूल में है, इसलिए तुम्हें ही रतालू और कसावा की जड़ों से खोदना होगा और उनसे बहुत ज़्यादा मात्रा में फू-फू पकाने में मेरी मदद करनी होगी."

नासिया का सिर झुक गया.

यह पिछले साल से बहुत अलग था! हालाँकि वह अभी भी खुश थी कि नया साल "हैप्पी डे" आ रहा है - उसने कभी नहीं सोचा था कि मस्ती मनाने में इतनी मेहनत चली जाएगी!

क्यों . . . इतनी मेहनत, सारी मस्ती को बिगाड़ सकती है!



नासिया की चमकीली आँखों को धुंधला होते देख उसकी माँ नरम पड़ गई.

"लेकिन अभी कुछ समय के लिए ऐसा नहीं होगा, मेरी उड़ने वाली लड़की! आज, मैं चाहती हूँ कि तुम दौड़कर मेरे लिए कुछ ताज़े नरकट लाओ ताकि मैं नए साल की टोकरियाँ बुन सकूँ!"

नासिया की आँखें चमकने लगीं.

"माँ मैं उन्हें कहाँ ढूँढूँगी?"

"तुम्हें नदी के किनारे जाना होगा. वहाँ पर तुम उन्हें पाओगी!"

उसकी माँ की आवाज़ गहरी और गंभीर थी.

"लेकिन ध्यान से सुनो, नासिया! टोकरियों का खास पैटर्न बनाने के लिए, मेरे पास गहरे और हल्के दोनों तरह के नरकट होने चाहिए - इसलिए दोनों का एक-एक गट्ठा लाना! फिर तुम्हें उन्हें सूखने के लिए तब तक रखना जब तक सूरज सबसे ऊँचे पेड़ की चोटी के पार न चला जाए."

फिर वह मुस्कुराई और बोली:

"लेकिन तुम तब तक खेल सकती हो...

नासिया उछल पड़ी और अपनी माँ की गर्दन में अपने हाथ डाल दिए.

"माँ, यह सब मैं खुद करूँगी! जब मैं वापस आऊँगी... तो बुनाई के लिए सबसे बढ़िया नरकट मेरे साथ होंगे!"

"चलो अब जाओ! दूर, जाओ! मेरी उड़ने वाली लड़की!"

नासिया की माँ ने हँसते हुए अपनी बेटी को विदा किया.



फिर उसने अपनी बेटी की छोटी सी दौड़ती हुई आकृति को देखते हुए आह भरी. "मेरी बेटी!" उसने सोचा. "वो कितनी जंगली है! लेकिन मैं उसे धीरे-धीरे करके रास्ते पर ले आऊंगी." फिर मुड़ते हुए, उसने अपनी दर्द भरी पीठ को सहलाया. "बस थोड़ी देर और ..." वो खुद से बड़बड़ाई.

रसोई के धुएँ की गंध फीकी पड़ गई थी क्योंकि अब देवदार के जंगल की ताज़ी खुशबू नासिया के नथुनो भर गई थी.

"पैर, पैर! मुझे वहाँ ले चलो!"

नासिया के पैर पहले ही उसे खलिहान से दूर ले जा चुके थे, झाड़ू से साफ मिट्टी के आंगन से होते हुए, जहां ताजे, चमकदार लाल कॉफी के फल एक बड़े घेरे में फैले हुए थे. वे तेज़ सूरज में सूखने के लिए तब तक पड़े रहेंगे जब तक कि वे एक अच्छे भूरे रंग में नहीं बदल जाते.

नासिया अपने चाचा अहौद के खेत के पास से भागी, जहाँ मज़दूर ज्वार को डंठलों से अलग कर रहे थे और महिलाएँ अपने सिर पर अनाज के बड़े भार उठा रही थीं.



लेकिन जब भी नासिया इस तरह मुक्त होकर दौड़ती थी, तो उसकी आँखें हमेशा नीले आसमान पर टिकी रहती थीं, उन पहाड़ों पर जो छप्पर की छतों से बहुत ऊपर और सबसे ऊँचे पेड़ों के सूरज की रोशनी से जगमगाते मुकुटों से भी ऊपर उठे हुए थे.

और कभी-कभी वह इतनी तेज़ी से भागना चाहती थी, कि वह गाती थी:

"मेरे दोनों हाथ! मुझे पंखों से वहाँ उड़ाकर ले चलो!"

नासिया हमेशा उम्मीद करती थी कि शायद अगर वह अपनी बाहें पंखों की तरह फैलाए, तो वह उन ऊँचे पहाड़ों की चोटियों तक उड़ पाएगी... और फिर वह पूरी, विस्तृत दुनिया को देख पाएगी!

"सिर्फ़ एक चील ही," नासिया ने खुद से कहा, "बहुत ऊँची ऊंचाई से इतना कुछ देख सकती है!"

वह उस चील की तरह बनना चाहती थी - आज़ाद और मुक्त - आसमान में हवा, नदियों पर ऊँची उड़ान भरती हुई अपने फैले हुए पंखों पर - वही हवा जो आसमान में बादलों को उड़ाती थी - और जो सबसे ऊँचे पेड़ों को भी नीचे झुका सकती थी और बाजरे के डंठलों में सरसराहट पैदा कर उन्हें उछाल सकती थी...

"मैं सच में उड़ने वाली लड़की बन जाऊँगी!" नासिया ने सोचा. "मैं बहुत आगे और ऊपर उड़ सकूंगी. क्यों... तब मैं अफ्रीका की सभी चौड़ी नदियों के ऊपर उड़ूँगी... यहाँ तक कि नाइजर तक के ऊपर भी!"

नदी! नरकट! वह माँ से किया अपना वादा लगभग भूल चुकी थी!



लेकिन नासिया को अब उड़ने के बारे में भूलना होगा.

"पैर, पैर! मुझे वहाँ ले चलो!" और उसके पैरों ने वही किया.

अचानक नासिया के पैर खुशी से मुड़ गए! उसने अभी-अभी एक नरम ठंडक महसूस की: धूल भरे पैर जो उसे इतनी दूर तक ले गए थे, अब पानी के किनारे ठंडी, नम मिट्टी में ख़ुशी से डूब गए.

वह अब नदी के किनारे पर थी! सरकंडे आस-पास ही होंगे..

जल्द ही नासिया का एक हाथ हल्के रंग के सरकंडों से भर गया और उसने उन्हें किनारे पर रख दिया. लेकिन उसे गहरे रंग के सरकंडे नहीं मिले, जिन्हें माँ ने मांगा था...

जैसे-जैसे वह नदी के किनारे खोजती हुई आगे बढ़ी, पानी में और भी गहराई तक संघर्ष करती हुई, तब हवा, पत्तियों और सरकंडों के बीच से उसका पीछा करती रही एक संगीतमय ध्वनि के साथ. तब नासिया को लगा कि उसने हवा में एक आवाज़ को गाते हुए सुना:

"चीजों को सुनो! समझदार छोटी औरत!

पानी की आवाज़ को सुनो..



"हवा को सुनो

सरकंडों की आहों को सुनो..

बहते और सोते पानी को सुनो."

नासिया ने अपनी सांस रोकी और खुद से कहा, "दिल, दिल! अब मजबूत बनो!"

फिर नासिया पलटी और किसी को न देखकर कांपते हुए बोली:

"तुम कौन हो?"

उसके कानों में धीरे से फुसफुसाती आवाज़ें गूंजी:

"अपने पूर्वजों की साँसों की आवाज़ सुनो

पत्तियों के हिलने में

और बहते पानी से घिसी हुई चट्टानों में."

नासिया उथले पानी में कांपती हुई बैठ गई.

वह कैसे यकीन करे? क्या कोई उसे धोखा दे रहा था? वो आवाज़ किसकी थी?

"हम तुम्हारे पूर्वजों की आत्माएँ हैं जो तुम्हारी रक्षा कर रही हैं.

हमारी बात अभी और हमेशा सुनो...



नासिया को याद आया कि उसकी दादी ने उससे कहा था कि पूर्वजों की आत्माएँ उनके घर की रक्षा करती हैं. लेकिन यहाँ - नदी के किनारे? फिर से जवाब आया:

"नदी में; पेड़ों में

घर में हर दिन हम तुम्हारे साथ होते हैं

हम सभी को जीवन से बांधते हैं एक-दूसरे से!

हम कहीं गए नहीं हैं

हम जलती हुए लकड़ियों में हैं

हम महिला के कान में हैं

हम बच्चे की चीख का जवाब देते हैं...

बहादुरी से खड़े होकर, नासिया कांप उठी:

"तो शायद...क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो? ...पवित्र टोकरियों के लिए अंधेरे में गहरे रंग के नरकट खोजने में?"



जब नासिया कांप रही थी, इंतज़ार कर रही थी, तब जवाब आया, धीरे से:

"बुद्धिमान छोटी औरत, सुनो!

अंधेरे में आहें भरने की आवाज़ को सुनो...

वह अंधेरा जो रोशन करता है

वह अंधेरा जो उसे और भी गहरा बनाता है...

और बहते और सोते पानी में...

वहाँ, तुम्हें काली नरकट मिलेंगी

नासिया ने गहरी साँस ली, जहाँ वह खड़ी थी, घुटनों तक पानी और नरकट में... और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, ताकि वो बेहतर तरीके से सुन सके.

अपनी पलकों के पीछे लाल अंधेरे में, वह पक्षियों की आवाज़ सुन सकती थी! "चहचहाहट! और और झींगुरों की "चीं चीं! उसने अपने सिर के ऊपर पत्तियों की तीखी "सरसराहट!" और पानी की खुशनुमा कलकल सुनी, "लू-लू! लू-लू!" जैसे ही वह गुजरी... तभी हवा का कोमल हाथ उसके चेहरे को छूने के लिए आगे बढ़ा - और उसने उसे गुदगुदाया!



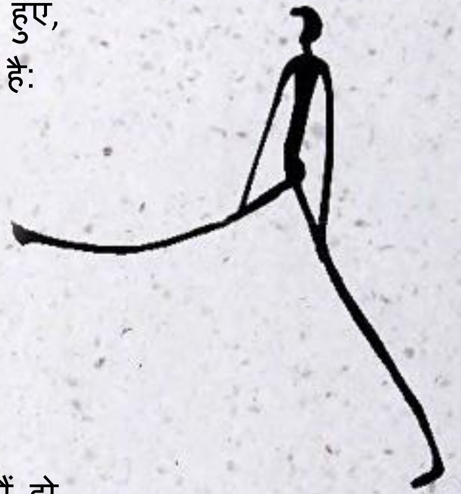
नासिया ने अपनी आँखें खोलीं. एक लंबा नरकट उसके चेहरे को सहलाने के लिए आगे झुका था! वो यह निश्चित रूप से एक गहरे रंग का नरकट था! और यह नदी के किनारे पर कई अन्य नरकटों के बीच खड़ा था, जो उसकी तरह ही काले थे!

आत्माओं ने उसके साथ यह उपहार साझा किया था, अब नासिया इतना ज़रूर जानती थी.

और जब उसने हल्के रंग वाले नरकटों के साथ गहरे रंग के नरकट इकट्ठा किए, नासिया ने हरेक से फुसफुसाते हुए कहा, "धन्यवाद!" अपनी माँ के कहे अनुसार उन्हें बाहर रखने के बाद, नासिया के पास खेलने का समय था. लेकिन उसके बजाय, वह नदी के किनारे बैठी और सोचती रही...



जब तक उसने ऊपर देखा, नासिया ने दूर के पेड़ के बीच में टिमटिमाते सूरज की लाल गेंद देखी! उसने जल्दी से सभी नरकटों को इकट्ठा किया, जो अब सख्त और सूखे थे. नरकटों को अपने गले लगाते हुए, नासिया को लगा कि उसने हवा को धीरे से फुसफुसाते हुए सुना है:



"बुद्धिमान छोटी औरत!

तुम्हारे लिए समय आ गया है.

उसे पकड़ने के लिए तैयार हो जाओ

सुनने के लिए तैयार हो जाओ...

"बुद्धिमान छोटी औरत?" उसने मन ही मन सोचा.. "शायद वो मैं हो सकती हूँ...!"

फिर, जब वह लगभग उड़ते हुए घर की ओर भागी, नासिया ने जोर से हँसते हुए कहा,

"पैर, पैर! मुझे घर ले चलो!

और उन्होंने वैसा ही किया!